निर्मल गुप्त

208 छीपी टैंक, मेरठ -250001

मो. 08171522922

चुप रहो .....

चुप रहो चुपचाप सहो

समझ जाओ जो चुप रहेंगे वे बचेंगे
बोलने वालों को सिर में गोली से
सुराख बना कर मार डाला जायेगा
खामोश रहने वालों को
करीने से जुल्फें संवारने के लिए
रत्नजड़ित सोने के कंघे दिए जायेंगे

चुप रहो, चुपचाप सहो
अपने-अपने बेडरूम में रह कर
क्रांति का ब्लूप्रिंट बनाओ
दिन रात अपने मंतव्यों के
कनकौए आसमान में उड़ाओ
ऐसे लोगों को खोज खोज कर
सुनहरे फ्रेम वाले बेशकीमती चश्मे दिए जाएंगे

चुप रहो चुपचाप रहो
लेकिन बोलने का नाटक लगातार करो
रीढ़ की हड्डी निकाल कर रख दो
ड्राइंगरूम के शोकेस में
वह वहीं रखी जंचती है
लचीलेपन की बड़ी जरूरत है इस वक्त
समयानुकूल घड़ियां कलाई पर बाँधी जाएँगी

चुप रहो चुपचाप सहो
तोल तोल कर प्रेमगीत गीत लिखो
जग को रिझाने के लिए
राजसी मुहर वाले दिव्य कवच मिलेंगे .
चुप रहो चुपचाप सहो
अपने मौन का भीतर ही भीतर मजा लो
तुम्हारी चुप्पी को कोई अन्यथा नहीं लेगा
यह बात एकदम पक्की है
इतिहास सिर्फ नादानी में जान गंवाने वालों की
मूर्खता अपने पन्नों में दर्ज करता है
प्रशस्ति तुम्हारी है तुम्हें मिलेगी .

चुप रहो चुपचाप सहो
सीने से लगा कर रखो
अपने अपने इनाम इकराम को

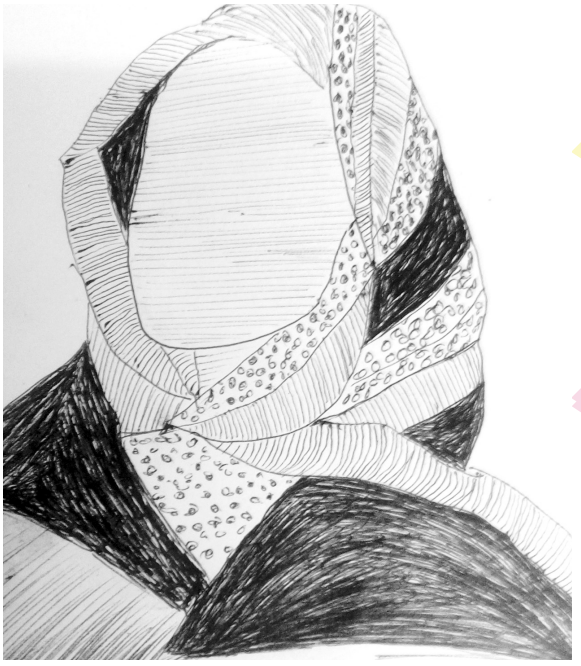

इन्हें संभाल कर रखो
ये रहेंगे तो तुम सब जिंदा रहोगे
तुम अमरबेल के वंशज हो
मौत तुम्हें किसी भाव न मिलेगी.

चुप रहो चुपचाप सहो
और सुनना है तो मेरी सुनो
खामोशी और चालाकी की
कोई पॉलिटिक्स नहीं होती पार्टनर
चुप रह जाने वाले कापुरुष को
कोई दर्द नहीं सताता
वे जीते जी बेमौत मर जाते हैं ❖